।।इक दिन सोच रहा था मैं।।

इक दिन सोच रहा था मैं, यु ही बैठा बैठा,
श्याम नहीं होता तो, फिर मेरा क्या होता
नैया में छेद मेरी, ले गया लहर में,
तूने बचाली वरना, डुबती भंवर में,
जोर हिलोरे खाये, कैसे इसको मैं खेता,
श्याम नहीं होता तो, फिर मेरा क्या होता

दाव जो भी खेला मैंने, उल्टा पड़ा है,
ये तो भला है मेरे, साथ तू खड़ा है,
जाने कितना पाता, जाने कितना खोता,
श्याम नहीं होता तो, फिर मेरा क्या होता

जिस हाल में थे सारे, छोड़ गये वैसा,
तूने ही थामा मुझको, श्याम हमेशा,
आंख सचिन की पोछी, जब देखा है रोता,
श्याम नहीं होता तो, फिर मेरा क्या होता

Downloaded from khatunareshshyambaba.in
Website design & developed by syllogisticinoftech.com